वन उत्पादकता संस्थान
रांची

यह संस्थान वर्ष 1993 में अस्तित्व में आया, इसे देश के पूर्वी क्षेत्र में वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा को सूत्रबद्ध, संगठित, निर्देशित और प्रबंधित करने का दायित्व सौंपा गया जिसमें बिहार, झारखण्ड, सिक्किम तथा पश्चिमी बंगाल राज्य आते हैं। सिक्किम और उत्तरी बंगाल के दर्शनीय क्षेत्र, बिहार और पश्चिमी बंगाल के हिन्द–गांगेय मैदान विश्व प्रसिद्ध सुन्दरवनों के डेल्टाई तथा तटीय कछारी वन, बिहार के उत्तर–पश्चिमी छोर पर तराई साल वनों के समूह और समृद्ध तथा मनभावन खनिज संसाधन भी इस संस्थान के कार्यक्षेत्र में शामिल हैं। इस प्रकार पूर्वी भारत की वानिकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वन उत्पादकता संस्थान, प्रमुख वानिकी संगठन है। यह संस्थान, वन अनुसंधान संस्थान विश्वविद्यालय के अनुसंधान केन्द्रों के रूप में भी कार्य करता है। इस संस्थान के पुस्तकालय में 6209 वैज्ञानिक एवं तकनीकी पुस्तकों एवं लघु–पुस्तिकाओं का मूल्यवान संग्रह मौजूद है। वर्तमान कार्य प्रणाली को अधिक पारदर्शी, सक्षम और उत्तरदायित्वपूर्ण बनाने के लिए भारतीय वानिकी अनुसंधान सूचना पद्धति की व्यापक परियोजना तैयार की गई है। आई.टी. संरचना स्कीम के तहत ई गवर्नेन्स की शुरूआतों को क्रियान्वित करने के लिए ई गवर्नेन्स पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा इस संस्थान को 45 "कम्प्यूटर डेस्कटॉप इन्टेल वीप्रो कान्फीगरेशन (टीएफटी सहित)" मुहैया कराये गये हैं।

संस्थान द्वारा चलाई जा रही परियोजनाओं का सारांश इस प्रकार है :

	2007–08 में पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या	2007–08 में जारी की गई परियोजनाओं की संख्या	2007–08 में शुरू की गई नई परियोजनाओं की संख्या
आयोजित परियोजनाएं	2	5	5
बाहर से सहायता प्राप्त परियोजनाएं	1	1	–
योग	3	6	5

वर्ष 2007–2008 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

आयोजित परियोजनाएं

परियोजना 1: बिहार, झारखण्ड और पश्चिमी बंगाल के संदर्भ में बांस–प्रजातियों के वैविध्य, निष्पादकता, संरक्षण और अर्थशास्त्र का अध्ययन [व.उ.सं.–16/एसएलआर–4/2002–08]

उपलब्धियाँ: कार्यक्षेत्रीय सर्वेक्षण करते हुए विभिन्न राज्यों में कई प्रजातियों का पता चला, यथा: बिहार में 10, झारखण्ड में 11, उत्तर–पश्चिमी बंगाल में 25 तथा दक्षिण–पश्चिमी बंगाल में 8,281 मृदा नमूने एकत्र किये गये तथा सह–संबंध अध्ययनों के लिए उनका विश्लेषण किया गया। परास्थनिक संरक्षण के लिए अध्ययन क्षेत्र में बांस की

उत्तम राईजोमयुक्त 620 रोपणियों को उदय सिंह जोट, ईआरएस, सुकना, नितईपुर, मिदनापुर, व.अ.के. भण्डार और व.उ.सं. में अनुरक्षित किया जा रहा है, बांस के वानस्पतिक प्रसार, पौधशाला प्रसार का समय और कलम की आयु आदि का मानकीकरण किया जा रहा है। बांस के खड़ों में पोषण चक्रों का आकलन किया गया।

परियोजना 2: दार्जीलिंग हिमालय के संकटापन्न औषधीय पादपों के लिए जर्मप्लाज्म संसाधन की संरचना [व.उ.सं.–018/ईबीसी–1/2003–08]

जर्मप्लाज्म संसाधन

उपलब्धियाँ: ग्यारह प्रजातियाँ के परास्थानिक औषधीय पादप उद्यानों की स्थापना की गई यथा: एकोरस केलेमस, कर्क्यूलिगों आर्कोइड्स, डायस्कोरिया डेलटोइडा, हेडीकियम स्पाईकाट्टम, रॉवुल्फिया सर्पेन्टाइना, एस्परागस रेसीमोसस वाइल्ड, एम्बलिका आफीसिनेलिस, ग्लीरियोसा सुपर्बा, ओसीमम सैंकटम, टाइनोस्पोरा कार्डीफोलिया, करक्यूमा सेइसिया। औषधीय पादपों के 85000 क्यू पी.एम. उत्पन्न किये गये जिनमें से 56000 रोपण सामग्री को किसानों, गैर सरकारी संगठनों तथा सिक्किम और पश्चिमी बंगाल राज्यों के राज्य वन विभागों को खेती/परीक्षण/प्रदर्शन के लिए वितरित किया गया। साथ ही किसानों और वानिकों के समक्ष प्रदर्शन और उत्पाद आकलन के लिए उदयसिंह में परीक्षण प्लाट स्थापित किये गये। शेष 29000 रोपण सामग्री को वर्ष 2008–09 में वितरित किया जायेगा।

बाहर से सहायता प्राप्त परियोजनाएं

परियोजना 1: झारखण्ड (नाबार्ड निधिकृत परियोजना) के मुख्य तेल उत्पादक वृक्षों की पहचान, संग्रह तथा आनुवंशीय मूल्याकन [व.उ.सं.–028/बीजीटी–6/नाबार्ड/2005–08]

उपलब्धियां: वैविध्य से संबंधित अध्ययनों, आनुवंशीय विश्लेषणों, सहयोजन अध्ययनों तथा कार्यक्षेत्रीय जैवमितिय विशेषताओं (कृन्तक तथा संततियों) की आनुवंशीय विविधताओं, फली और बीज अभिलक्षणों करंज की 24 सीपीटी तथा महुआ की 23 सीपीटी जैव रासायनिक विशेषताओं पर खोज करने से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये:

- ❖ जैवमितीय विशेषताओं, फली तथा बीज की विशेषताओं, अर्द्ध सगोत्रीय विशेषताओं तथा जैवरासायनिक विशेषताओं के वैविध्य का आकलन किया गया और इनमें पर्याप्त वैविध्य पाया गया।
- ❖ अध्ययन के अन्तर्गत आने वाली सभी विशेषताओं में जीसीवी, पीसीवी, कुल परंपरा और आनुवंशीय उच्चता जानने के लिए द्वितीय मार्ग में आनुवंशीय आकलन किये गये। यह पाया गया कि आयतन सूची, सौ बीजों का भार, सामर्थ्य सूची, अम्ल मूल्य तथा कुल तेल मात्रा को प्रजनन से सुधारा जा सकता है।

झारखंड़ के मुख्य तेल उत्पादक वृक्ष

❖ सहयोजित अध्ययनों, सह–संवर्धन तथा पुरूगामी विश्लेषणों के अभिलक्षणों में अन्तः संबंधों का पता लगाया गया। अध्ययन से पता चला कि कॉलर व्यास 2डी धरातल क्षेत्र तने की लम्बाई और प्रोटीन की मात्रा को उच्च आयतन सूची, अंकुरण, सामर्थ्य सूची तथा कुल तेल मात्रा के अनुसार चयनित किया जा सकता है।

❖ जैवमितीय अवलोकनों का उपयोग करते हुये संग्रहित कृन्तकों की आनुवंशीय विविधता का विश्लेषण किया गया जिससे पता चला कि कृन्तकों के भौगोलिक वितरण में समरूपता नहीं होती है।

वर्ष 2007–2008 के दौरान जारी परियोजनाएं

आयोजित परियोजनाएं

परियोजना 1: छोटा नागपुर तथा संथाल परगना की चयनित औषधीय वनस्पतियों के लिए उपयुक्त संवर्धनिक पद्धति का विकास [व.उ.सं./022/एफएमएस–3/2003–08]

स्थितिः टीक और शीशम की छाया स्थितियों का डब्ल्यू. सोम्नीफेरा, ए. रेसीमोसस तथा आर. सर्पेन्टाईना पर प्रभाव नहीं पड़ता है। डब्ल्यू. सोम्नीफेरा तथा आर. सर्पेन्टाईना में खुले में फलन अधिक होता है। छाया में उत्तरजीवितता प्रतिशत अधिक होता है। जी–सुपर्बा छाया पसन्द है जो केवल एग्रोनेट में जीवित रहता है (एलआई–70%)।

परियोजना 2: झारखण्ड की आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण वानिकी प्रजातियों के बीज डाटाबेस की स्थापना का उद्देश्य तथा वानिकी बीज प्रभावीकरण निकाय की स्थापना [व.उ.सं./30/एफएमएस–5/2006–11]

स्थितिः बीज प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं पर साहित्य की समीक्षा की गई। उत्तम बीज स्रोतों की पहचान एवं चयन किया गया। बीजों के भौतिकीय मापदण्डों यथा : बीज भार, लम्बाई, चौड़ाई आकार रंग आदि को रिकार्ड किया गया।

परियोजना 3: वनीय वृक्षों तथा झाड़ियों में जलवायु परिवर्तन की संवेदनशीलता तथा बीजों पर समाघात को न्यूनतम करने की रणनीतियें को अपनाने पर विकास [व.उ.सं.–029/एफएमएस–4/2005–09]

स्थितिः दो खुले किस्म के गैस चेम्बर्स बनाये गये नीम, सिस्सू तथा गमहर के पौधों की जैवमात्रा का आकलन करने हेतु पौध वृद्धि मापदण्डों को अपनाया गया। प्रयोग को खुली कार्यक्षेत्रीय स्थितियों में अनुरक्षित किया गया।

परियोजना 4: स्केलीकेरा ओलिओसा की वृहत प्रसारण तकनीकों का माननीकरण तथा कृन्तकीय तद्रूपता अध्ययन [व.उ.सं.–032/बीजीटी–7/2006–09]

स्थितिः उड़ीसा और पश्चिमी बंगाल में 10 और उत्तम वृक्षों को चयनित किया गया। झारखण्ड और उड़ीसा की विभिन्न अवस्थितियों से शाखाओं/कलमों को एकत्रित किया गया। ग्राफ्टिंग तथा एअर लेयरिंग शुरू किया जा चुका है। मौसम, आकार तथा वृक्ष की आयु के अनुसार कर्तन प्रयोग किये गये। जड़ स्टॉक बढ़ाने के लिए एसएफडी, बंगाल से पौधे प्राप्त किये गये।

परियोजना 5: छोटा नागपुर पठार, झारखण्ड की निम्नीकृत वन मृदाओं के लिए पुनरुद्धार तथा प्रजाति उपयुक्तता रणनीतियां तैयार की गई [व.उ.सं.–031/एसएलआर–7/2006–11]

स्थितिः परियोजना के तहत चयनित स्थलों से पौधशाला स्थापनाओं तथा कार्यक्षेत्रीय परीक्षणों से सामग्रियां एकत्र की गई। वृद्धि सीमित करने वाले तथा भूमि निम्नीकरण करने वाले कारकों के आकलन हेतु नमूने एकत्र किये गये।

कार्य क्षेत्रीय परीक्षणों के लिए प्रजाति उपयुक्तता की जांच करने हेतु भूमि की तैयारी, भूखंडों का विन्यास और पौधशाला परीक्षण किये गये। पॉट (गमलो) तथा कार्यक्षेत्रीय परीक्षणों से आवधिक वृद्धि डाटा संग्रहित किया गया। डाटा को विश्लेषित एवं प्रलेखीकृत किया गया।

बाहर से सहायता प्राप्त परियोजनाएं

परियोजना 1: झारखण्ड के चयनित जिलों में देशज् परम्परागत औषधीय ज्ञान का प्रलेखीकरण तथा सम्पति सूचीकरण (एनएमपीबी द्वारा निधि प्राप्त) [व.उ.सं.–33/ईबीसी–4/एनएमपीबी/2005–08]

स्थितिः अतिवादियों तथा बागियों के लिए सुपरिचित जिलों–गुमला तथा सिम्देगा के दूरस्त इलाको में सर्वेक्षण किया गया। आदिम जनजातियों के वर्गो यथा : बीरहोस, कनवार, कोर्वा तथा एस्यूर्स का पता लगाया गया। गुमला जिले के चेनपुर ब्लाक में टॉगों पेरिश में जड़ी–बूटियों से ईलाज करने वाले व्यक्ति का पता चला जो पूरे भारत के इच्छुक लोगों को जड़ीय औषधियों से ईलाज करने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाता है। वह अपने वानस्पतिक उद्यान में औषधीय पादपों का स्वस्थानिक तथा परस्थानिक संरक्षण भी करता है। उसकी वानस्पतिक वाटिका में सुरक्षित संकटापन्न और दुर्लभ पादप प्रजातियों का वीडियो रिकार्डिग भी किया गया।

झारखंड़ में परम्परागत देशज औषधीय ज्ञान का प्रलेखीकरण एवं सम्पति सूचीकरण

वर्ष 2007–2008 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं

आयोजित परियोजनाएं

परियोजना 1: पूर्वी भारत के जैट्रोफा करकस एल. का आनुवंशीय मूल्यांकन तथा आण्विक अभिलक्षण [व.उ.सं.–38/बीजीटी–10/2007–10]

स्थितिः साहित्य सर्वेक्षण किया गया, सीपीटी का सर्वेक्षण पहचान और चयन किया गया। झारखण्ड में 16 अनुक्रमों को संग्रहित किया गया। पूर्वी भारत के विभिन्न राज्यों से 36 अनुक्रम संग्रहित किय गये। वैज्ञानिक उपकरण ग्लासवेयर तथा रसायनों का प्रापण किया गया।

परियोजना 2: स्केलीकेरा ओलिओसा के पुष्पीय जीवविज्ञान फलन ऋतुजैविकी तथा अंकुरण व्यवहार का अध्ययन [आईएफपी–037/बीजीटी–9/2007–10]

स्थितिः झारखण्ड और उड़ीसा राज्यों से संग्रहित बीजों का प्रक्रमण किया गया। बीजों के अंकुरण पर अध्ययन के लिए पूर्व–उपचारों का अनुप्रयोग किया गया। उपकरणों तथा रसायनों का प्रापण किया गया।

परियोजना 3: स्केलीकेरा ओलिओसा के इन विट्रो पौधों का जड़न एवं अनुकूलन [व.उ.सं.–036/बीजीटी–8/2007–10]

स्थितिः पौधा संवृद्धि की शुरूआत की गई। प्रयोग के लिए 25 विभिन्न माध्यमों के संघटन को तैयार किया गया। रसायन तथा उपकरणों का प्रापण किया गया।

स्केलीकेरा ओलिओसा के पादप

परियोजना 4: बांस की कृन्तीय प्रसार तकनीकों में सुधार तथा कार्यक्षेत्रीय उत्तरजीवितता में वृद्धि [व.उ.सं.–035/एसएलआर–8/2007–11]

स्थितिः दक्षिण–पश्चिमी बंगाल तथा झारखण्ड से रोपण सामग्रियां एकत्र की गई। प्रसार और परीक्षणों के लिए पौधशाला तथा प्रसार क्यारियों का विकास किया गया। पौधशाला क्यारियों तथा पॉली पॉट्स में मृदा सुधारों जीपीएस आदि से प्रभावित अंकुरण तथा जड़न पर पांच सामान्य प्रजातियों पर परीक्षण किये गये। विभिन्न परीक्षणों में रोपण के बाद कठोरता और कार्यक्षेत्रीय उत्तरजीवितता पर डी. एस्पर का ऊतक व्यवहार प्रसार जारी है। डी. एस्पर की वर्तमान संवृद्धि की उपसंवृद्धि पर पौध–गुणन किया गया।

परियोजना 5: पूर्वी भारत की बांस की आनुवंशीय विविधता तथा विशिष्ट प्रजाति के आण्विक मार्कर्स के विकास का आकलन [व.उ.सं.–039/बीजीटी–11/2007–09]

स्थितिः बांस की आनुवंशीय विविधता आबादी संरचना में संबद्ध साहित्य की समीक्षा की गई। मार्कर पद्धतियों का विकास किया गया। पूर्वी तथा पश्चिमी मिदनापुर (पश्चिम बंगाल) में डेन्ड्रोकेलेमस स्ट्रिक्टस, बैम्बूसा बेम्बोस और बी. टूल्डा की पहचान और संग्रह पर सर्वेक्षण किया गया। बी.एस.आई., कलकत्ता से 15 प्रजातियों का संग्रह किया गया और पादप सामग्री को व.उ.सं., रांची में परिरक्षित किया गया।

प्रौद्योगिकी मूल्यांकित एवं हस्तान्तरित

हस्तान्तरित प्रौद्योगिकी

वन उत्पादकता संस्थान ने वन उत्पादकता में सुधार तथा पर्यावरण संरक्षण/पुनरुद्धार की तकनीकों को उपभोक्ता वर्गो में हस्तान्तरित करने हेतु तकनीकियां विकसित की हैं।

आकलित प्रौद्योगिकी

1. चयनित औषधीय पादपों की प्रसार
2. बांस का वृहत प्रसार
3. मृदा का प्रयोगशाला विश्लेषण तथा कमियों का उपचार
4. रूट ट्रेनर का उपयोग करते हुये हाईटेक पौधशालाओं में स्तरीय रोपण सामग्री का उत्पादन

5. मुख्य वानिकी प्रजातियों के सूक्ष्म प्रसार की तकनीकें
6. कम्पोस्टिंग/वर्मी कम्पोस्टिंग द्वारा कार्बनिक कचरे का रिसाइक्लिंग
7. लाख की खेती के लिए सुधारित तकनीकें
8. समस्याग्रस्त मृदा तथा खनन् से उजाड़ हुये क्षेत्रों का जैवपुनरुद्धार

शिक्षा और प्रशिक्षण

शिक्षा

1. संस्थान द्वारा रांची केन्द्र में 27 मई 2007 को व.अ.सं. समविश्वविद्यालय में एम.एससी तथा पीजी डिप्लोमा कोर्स की प्रवेश परीक्षा का आयोजन किया गया।
2. संस्थान में 25 सितम्बर 2007 को पीएचडी की छात्रा श्रीमती शम्पा सहाय का प्रस्तुतीकरण से पूर्व के शोध पर सेमीनार आयोजित किया गया। अनुसंधान कार्य का शीर्ष था ''पूर्वी बोकारों कोयला क्षेत्र में कोयले की धुलाई के अवशेष के पुनरुद्धार की पद्धतियां : एक कार्य अध्ययन''। यह शोध कार्य व.अ.सं. विश्वविद्यालय देहरादून द्वारा डाक्टोरल कार्यक्रम के अन्तर्गत कराया जा रहा है।

प्रशिक्षण

संस्थान द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है :

- ❖ बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, कांके, रांची के साथ 16 फरवरी 2008 को बांस के प्रसार पर संयुक्त रूप से कार्यक्षेत्रीय प्रशिक्षण तथा प्रदर्शन का आयोजन किया गया।
- ❖ टाटीसिंघरी, जोन्हा, झारखंड में 7 मार्च 2008 को लाख की खेती पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- ❖ 24 से 28 मार्च 2008 तक "आधुनिक पौधशाला तकनीकों" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें राजस्व वन विभाग, झारखण्ड के सहायक वन संरक्षकों ने भाग लिया।
- ❖ एफ.आर.सी. मंदार तथा ई.आर.एस. सुकना में ''बांस के खेती और प्रबंधन'' पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें प्रगतिशील किसानों, गैरसरकारी संगठनों तथा राज्य वन विभाग के कार्मिकों ने क्रमशः 2007 और 2008 में भाग लिया।

"बाँस की खेती और प्रबंधन" पर एफ.आर.सी. भण्डार तथा ईआरएस, सुकना में कार्यशाला

सहानुबन्ध और सहयोग

अन्तर्राष्ट्रीय

ईडब्ल्यूआई, यूएसए, डीएफआई (यूके), आईडीआरसी, यूएनडीपी

राष्ट्रीय

एनएबीएआरडी, एनएमपीबी, डीबीटी, सीसीएल, डीवीसी, आईएलआरआई, आईएसएम, एचएआरपी, बीएयू, एफएसआई, एसएफडी, (झाड़खण्ड, पश्चिम बंगाल, बिहार), योजना आयोग, भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय।

प्रकाशन

- ❖ वार्षिक लाक बुलेटिन
- ❖ वन उत्पादन संस्थान – एक प्रोफाईल
- ❖ वानिकी विस्तार रणनीति समीक्षा पर क्षेत्रीय कार्यशाला की कार्यवाही 23 मार्च 2007
- ❖ 210 उपयोगी औषधीय पादपों पर ''उत्तरी बंगाल के औषधीय पादप संसाधन'' नामक पुस्तिका
- ❖ 29 और 30 नवम्बर 2007 को वन उत्पादन संस्थान, रांची में ''बांस संसाधनों का संरक्षण एवं प्रबंधन'' पर स्मारिका तथा राष्ट्रीय सेमीनार के लिए सार–संग्रह

परामर्श

संस्थान को निम्नलिखित परामर्श तथा अन्य सेवायें प्रदान की गई :

1. "चन्द्रपुरा थर्मल पावर स्टेशन" में गड़बड़ी वाले स्थलों में हरित पट्टिका विकास पर व.उ.सं. तथा डी.वी.सी. के बीच सहमति के ज्ञापन पर हस्ताक्षर।
2. पूर्वी क्षेत्र के विभिन्न जिलों के वन मृदा नमूनों में आर्गेनिक कार्बन और तृण शैयाओं का आकलन तथा 65 डिसे. वन तृण शैयाओं के भार का मूल्यांकन। भा.वा.अ.शि.प. तथा पूर्वी क्षेत्र कलकत्ता द्वारा ज्ञापन पर हस्ताक्षर।
3. झारखण्ड के बांस संसाधनों का सर्वेक्षण। झारखण्ड राज्य वन विकास कार्पोरेशन लि. द्वारा निधि प्राप्त।
4. लाक की वैज्ञानिक संवृद्धि का अग्रिम ब्रूडलैक फार्म विकास तथा पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले में लाक को तैयार करने की सुविधाओं के बारे में एसईपीसी कलकत्ता के साथ व.उ.सं. का सहयोग।

सम्मेलन / बैठकें / कार्यशालायें / संगोष्ठी / प्रदर्शनियां

1. वन उत्पादन संस्थान, रांची में 1 और 2 मई 2007 को ''एमएसपीपीएसवाई, बिहार राज्य'' पर गैर सरकारी संगठनों की अनुकूलन कार्यशाला का आयोजन
2. राष्ट्रीय वानिकी योजना में संशोधन : अनुसंधान प्राथमिकताओं का निर्धारण विषयों पर 29 जून 2007 की रांची में व.उ.सं., रांची में क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन।
3. 6 और 7 सितम्बर 2007 को संस्थान की अनुसंधान सलाहकार वर्ग की 9 वीं बैठक का आयोजन किया गया।
4. ''बांस संसाधनों का संरक्षण और प्रबंधन'' पर राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन 29 और 30 नवम्बर 2007 को रांची में भा.वा.अ.शि.प., देहरादून तथा बांस अनुप्रयोग राष्ट्रीय मिशन, नई दिल्ली, के संरक्षण में किया गया।
5. ''वानिकी सांख्यिकी पर क्षेत्रीय कार्यशाला'' का आयोजन संस्थान द्वारा 7 सितम्बर 2007 को ''उष्णकटिबंधीय प्रकाष्ठ तथा भारत के अन्य वानिकी मापदण्डों से संबंधित सांख्यिकी के संग्रह प्रक्रमण और प्रसार हेतु नेटवर्क की स्थापना'' नामक परियोजना के तहत किया गया जिसे अन्तर्राष्ट्रीय उष्णकटिबंधीय प्रकाष्ठ संगठन द्वारा प्रायोजित किया गया था।

6. संस्थान में जैव विविधता संरक्षण :– समुदाय आधारित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन 12 फरवरी 2008 को यूएनडीपी भारत सरकार व.उ.सं. के तहत आरंभिक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

अवार्ड्स

11 अगस्त 2008 को एनएबीएआरडी के रजत जयन्ती समारोह के दौरान महामहीम श्री सैयद सिब्टे राजा, गवर्नर, झारखंड ने संस्थान को वन उत्पादकता का मान्यता प्रमाण पत्र दिया जो एनएबीएआरडी द्वारा सहायता प्राप्त परियोजना ''झारखण्ड के मुख्य तेल उत्पादक वृक्षों की पहचान, संग्रह और आनुवंशीय मूल्यांकन'' के आधार पर दिया गया। इस अवसर पर महामहीम गवर्नर झारखण्ड द्वारा निदेशक, वन उत्पादन संस्थान को शाल भेंट किया गया।

प्रतिष्ठित आगन्तुक

''उच्च विपणन मूल्य के औषधीय पादपों यथा : जायमेना सिल्वस्ट्री तथा एम्बिलिया राइब्स की कृषि तकनीकों का विकास'' नामक पूरी की गई परियोजना का मूल्यांकन करने हेतु 10 से 12 मई 2007 को डॉ. एम.ए. खान, कृषि वानिकी विभाग, सीएसए कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय द्वारा विशेषज्ञ के रूप में संस्थान का दौरा किया गया।

विविध

- ❖ 18 जून 2007 को कार्यालय में ''रेगिस्तान का मुकाबला करने हेतु विश्व दिवस'' मनाया गया ताकि हर किसी का ध्यान आकर्षित किया जा सके कि सामुदायिक भागीदारी और सभी स्तरों पर सहयोग करके ही रेगिस्तानीकरण का मुकाबला किया जा सकता है।
- ❖ 17 जुलाई 2007 को वन महोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर परिसर में वृक्षारोपण किया गया।